Copyrighted By hubstd.com

आपदाओं का वर्गीकरण

आपदाएं दो प्रकार की होती हैं प्राकृतिक आपदा व मानव जनित आपदा। प्राकृतिक आपदाओं में भूकंप, ज्वालामुखी, भूस्खलन, बाढ़, सूखा, वनों में आग लगना , शीतलहर, समुद्री तूफान, तापलहर, सुनामी, आकाशीय बिजली का गिरना, बादलों का फटना आदि आते हैं।

आपदा एक प्राकृतिक अथवा मानव जनित घटना है, जिसका व्यापक परिणाम मानव क्षति है, अर्थात् - आपदा उन अप्रत्याशित दुष्प्रभावी चरम घटनाओं व प्रकोपों को कहा जाता है, जो प्रकृतिजन्य या मानवजनित होती हैं तथा जिनके द्वारा मानव, जीव-जन्तु एवं पादप समुदाय को अपार क्षति होती है। आपदा को अंग्रेजी में डिजास्टर (Disaster) कहा जाता है। इस शब्द की उत्पत्ति फ्रेंच शब्द डीजास्त्र (Desastre) से हुई है, जो दो शब्दों 'Des' तथा 'Astre' से मिलकर बना है, जिसमें 'Des' का अर्थ अशुभ तथा 'Astre' का अर्थ सितारा होता है। इस प्रकार, अक्षरशः डिजास्टर का अर्थ अशुभ सितारा होता है।
कभी-कभी आपदा को प्रकोप भी कहा जाता है, परन्तु प्रकोप और आपदा में अन्तर है

1. **प्रकोप (Hazard) -** प्रकोप, वे प्राकृतिक घटनाएं हैं, जो किसी भी तंत्र को व्यापक रूप से प्रभावित करती हैं तथा जो निर्जनक्षेत्रों में उत्पन्न होती हैं।
2. **आपदा (Disaster) -** आपदा प्राकृतिक अथवा मानवीय कारणों से उत्पन्न, वे चरम घटनाएं होती हैं, जो मानव को प्रभावितकरती हैं। जब प्रकोप मानव आवासित क्षेत्र में आता है, तब आपदा का रूप से लेता है, जैसे - ऊष्णकटिबंधीय चक्रवात आदि । सभी प्रकोप आपदा नहीं होते हैं। जब प्रकोप रिहायसी क्षेत्रों में आते हैं, तो वे आपदा बन जाते हैं अन्यथा वे निर्जन (मानव रहित) क्षेत्रों में मात्र चरम घटना ही बनकर रह जाते हैं।

आपदाओं के दौरान वैकल्पिक संचार के साधन-

मानव समुदाय के सामाजिक-आर्थिक विकास के क्रम में समय के साथ प्राकृतिक आपदा के दुष्परिणाम, उसकी गहनता (Intensity)आपदा के प्रकारएवं बारंबारता (Frequency) तथा उसके द्वारा

होने वाली क्षति बढ़ती जा रही है। विश्वभर के लोगों में इन आपदाओं के द्वारा उत्पन्न होने वाले नुकसान के प्रति चिंता निरन्तर बढ़ रही है तथा इनसे उत्पन्न जान-माल की क्षति को कम करने के उपाय ढूंढ़ने के प्रयास किए जा रहे हैं।

आपदा के प्रकार

प्राकृतिक आपदाए

मानव पर दुष्प्रभाव डालने वाले प्राकृतिक परिवर्तनों को प्राकृतिक आपदाएं कहते हैं। प्राकृतिक आपदाएं अपेक्षाकृत तीव्रता से घटित होती हैं, जिन पर मानव समाज का नियंत्रण नहीं के बराबर होता है। इसके अन्तर्गत भूकम्प, भू-स्खलन, ज्वालामुखी विस्फोट, बाढ़, चक्रवात, रेगिस्तानी एवं हिमाच्छादित क्षेत्रों में विषम जलवायु दशाएं आदि आते हैं। इस प्रकार प्राकृतिक आपदाएं न केवल जन-धन को हानि पहुंचाती हैं, बल्कि पर्यावरण के ढांचे को भी प्रभावित करती हैं।

आपदा प्रबंधन की आवश्यकता क्यों है?

मानवजनित आपदाएं

- मानवजनित आपदाएं ऐसी आपदा होती हैं, जिनके लिए सीधे तौर पर मानव जिम्मेदार हैं। ग्रीन हाउस प्रभाव व भूमण्डलीय तापन, वायु, जल व ध्वनि प्रदूषण, नाभिकीय दुर्घटना, बम विस्फोट, रेल, वायुयान व सड़क दुर्घटनाएं, शहरी आग, वनाग्नि आदि मानवीय क्रियाकलापों के ही परिणाम हैं । इसके अतिरिक्त कुछ प्राकृतिक आपदाओं को मानवीय गतिविधियों से बढ़ावा भी मिलता है। उदाहरणार्थ - वनों को काटने से बाढ़, सूखा, भू-स्खलन आदि का प्रकोप बढ़ जाता है।
- आपदाएं वैश्विक रूप से घटित हो रही हैं। विश्व में प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप में आपदा से प्रभावित लोगों की संख्या दिन-प्रतिदिन बढ़ती जा रही है। इसका सबसे बड़ा कारण विश्व में जनसंख्या का निरन्तर वृद्धि होना है, क्योंकि जनसंख्या वृद्धि से आपदा प्रभावित क्षेत्रों में मानव बसाव की सघनता में निरन्तर वृद्धि हो रही है। विकसित देशों के साथ-साथ विकासशील देश भी प्राकृतिक और मानवजनित दोनों ही आपदाओं के विनाशकारी परिणामों द्वारा प्रभावित हो रहे हैं। संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा 2014 में जारी किए गए एक रिपोर्ट के अनुसार, वर्ष 2013 में भूकम्प और जलवायु परिवर्तन के कारण आई आपदाओं से दुनिया भर में 2.2 करोड़ लोग विस्थापित हुए, जो वर्ष 2012 में संघर्षों के कारण

विस्थापित हुए लोगों की संख्या के लगभग 3 गुना है। भारत में वर्ष 2008-2013 के बीच कुल 2.16 कराड लोग विस्थापित हुए, जो कि चीन के बाद सर्वाधिक है।

- यहां उल्लेखनीय है कि प्राकृतिक आपदा तथा मानवजनित आपदा एक-दूसरे से पूर्णतः पृथक नहीं है। कभी-कभी प्राकृतिक आपदाएं आगे चलकर मानवजनित आपदाओं का कारण बनती हैं, तो कभी मानवजनित क्रियाएं प्राकृतिक आपदाओं को बढ़ा देती हैं।
-

आर्थिक विकास का महत्व बताइए।

आपदा का अर्थ किसी भी क्षेत्र में प्राकृतिक या मानव निर्मित कारणों से होने वाली दुर्घटना, घटना, आपदा या गंभीर घटना, या लापरवाही से है जिसके परिणामस्वरूप जीवन का पर्याप्त नुकसान होता है या मानव पीड़ा या क्षति, और संपत्ति का विनाश, या क्षति, या पर्यावरण का क्षरण होता है तथा वह घटना ऐसी प्रकृति और परिमाण की हो जिस से उभर पाना प्रभावित क्षेत्र के समुदाय की क्षमता से परे हो।"

एक कुशल आपदा प्रबंधन प्रणाली द्वारा विभिन्न आपदाओं से होने वाले नुकसान को काफी हद तक टाला जा सकता है। कम से कम हताहतों की संख्या को कम या शून्य किया जा सकता है। भारतीय उपमहाद्वीप की भौगोलिक और पर्यावरणीय स्थिति ऐसी है कि यहां विभिन्न प्रकार की आपदाओं के घटित होने की संभावना से इंकार नहीं किया जा सकता है। जैसा-

1. भारतीय उपमहाद्वीप का लगभग 60 प्रतिशत भू-भाग भूकंप प्रवण क्षेत्र के अंतर्गत आता है।
2. भारत विश्व के लगभग 10% चक्रवातों के प्रभाव में आता है।
3. भारत की लगभग 68% कृषि योग्य भूमि सूखे की चपेट में है।
4. मानवीय हस्तक्षेप से हिमालयी क्षेत्र और पश्चिमी घाटों में भूस्खलन की घटनाओं में वृद्धि हुई है।
5. एक बड़ा क्षेत्र बाढ़ से प्रभावित है।
6. शुष्क पर्णपाती और पर्णपाती जंगलों में आग की लगातार घटनाएँ।

भारत में बढ़ती जनसंख्या की आवश्यकताओं के कारण पर्यावरण में मानवीय हस्तक्षेप में वृद्धि के कारण विभिन्न प्रकार की आपदाओं की आवृत्ति में वृद्धि हुई है। इसलिए, एक कुशल, प्रभावी और मजबूत आपदा प्रबंधन प्रणाली को सक्रिय करना समय की मांग है।

आपदा के दौरान बचाव के उपाय-

भारत में आपदा को निम्न श्रेणियों में बाँटा गया है- आपदाओं का वर्गीकरण

- जल एवं जलवायु से जुड़ी आपदाएँ : चक्रवात, बवण्डर एवं तूफान, ओलावृष्टि, बादल फटना, लू व शीतलहर, हिमस्खलन, सूखा, समुद्र-क्षरण, मेघ-गर्जन व बिजली का कड़कना।
- भूमि संबंधी आपदाएँ : भूस्खलन, भूकंप, बांध का टूटना, खदान में आग।
- दुर्घटना संबंधी आपदाएँ: जंगलों में आग लगना, शहरों में आग लगना, खदानों में पानी भरना, तेल का फैलाव, प्रमुख इमारतों का ढहना, एक साथ कई बम विस्फोट, बिजली से आग लगना, हवाई, सड़क एवं रेल दुर्घटनाएँ।
- जैविक आपदाएँ : महामारियॉ, कीटों का हमला, पशुओं की महामारियॉ, जहरीला भोजन।
- रासायनिक, औद्योगिक एवं परमाणु संबंधी आपदाएं, रासायनिक गैस का रिसाव, परमाणु बम गिरना